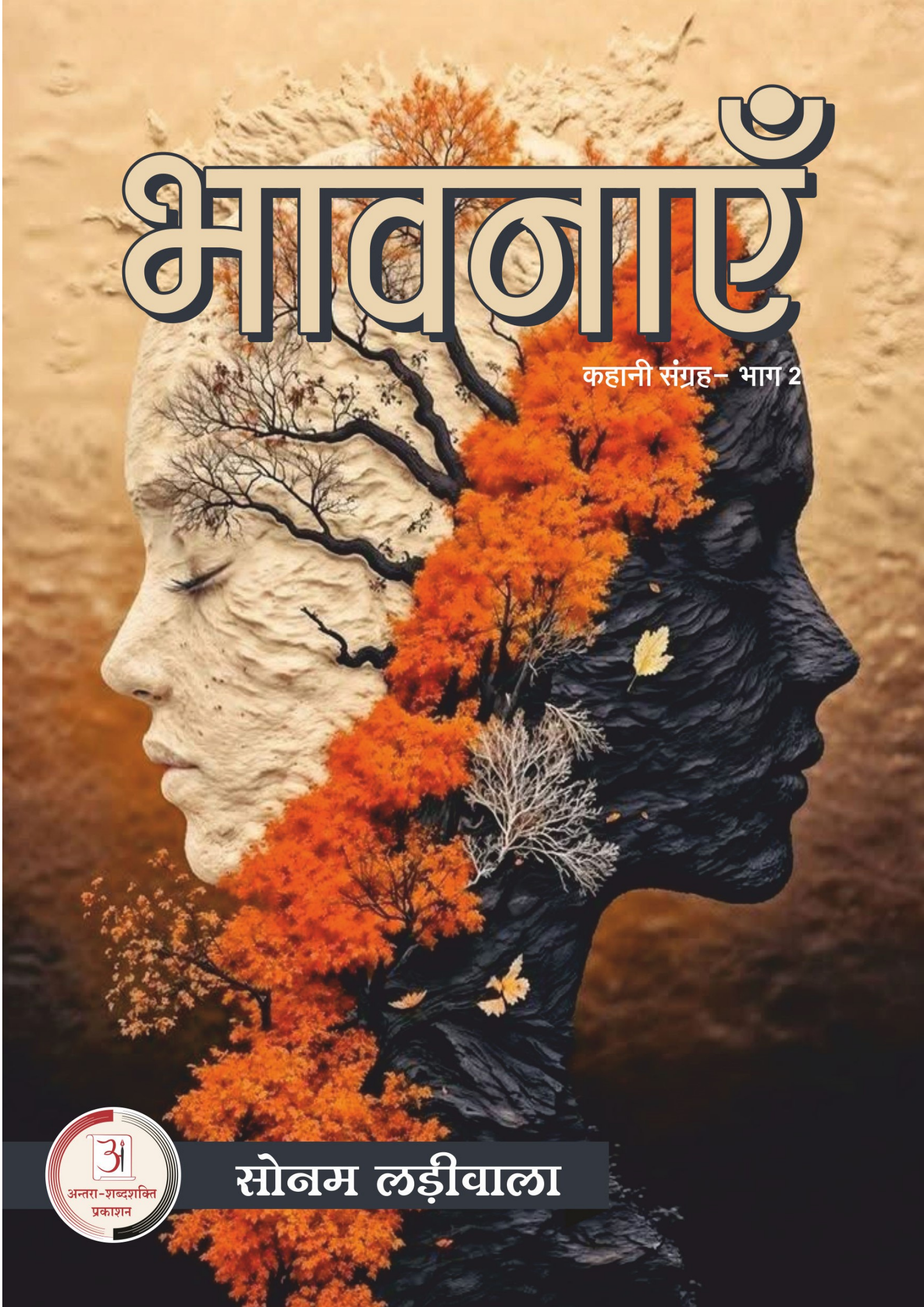

भावनाएँ

कहानी संग्रह– भाग 2

सोनम लड़ीवाला

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

भावनाएँ

भाग-2

कहानी संग्रह

सोनम लड़ीवाला

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-43-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरु चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, **सोनम लड़ीवाला**
मूल्य- 200/- रुपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SONAM LADIWALA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

परम पिता परमेश्वर की कृपा पात्र मैं, अपने पहले संकलन के प्रति आप सभी सहयोगियों के सहयोग और प्रेम के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। एक और प्रयास कुछ अलग, इस बार कहानी संग्रह के रूप में। विशेषता वही पुरानी, अंदाज नया। कुछ सिखाती, कुछ गुदगुदाती कहानियाँ, जिनमें कुछ अनुभव, कुछ अभिलाषाओं का समागम लिए आपके समक्ष, आपके लिए।

आभारी हूँ परम पिता परमात्मा की, कि उन्होंने इस कला का तोहफा मुझे दिया। परिवार का हर एक सदस्य का, जिसने इस सफर को मेरे लिए अपने आशीष से सरल बनाया। शायद चंद रचनाओं के बाद मेरा लेखन रुक जाता, परन्तु मेरे स्कूल के डायरेक्टर सर के कहे कुछ शब्द सदा मुझे आगे लिखने के लिए प्रेरित करते रहे और उसके बाद अन्तरा शब्दशक्ति जैसा मंच, जो नए नए विषय देकर हमारे लिखने की क्षमता को बढ़ता है और सोच को विस्तृत बनाता है। उम्मीद करती हूँ इस बार भी प्रेम और आशीष पूर्व की भाँति बनाए रखेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह कहानी संग्रह आपको पसंद आयेगा। उम्मीद है कि इन कहानियों में आप सभी अपने आप को जुड़ा हुआ पायेंगे।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	गलतफहमी	5-6
2.	सच्ची राह	7-8
3.	प्रीत की रीत	9-10
4.	दिवाली	11-12
5.	परवरिश और संस्कार	13-14
6.	उपकार	15-16
7.	विसर्जन	17-18
8.	मार्गदर्शन	19
9.	जादू का पिटारा	20-21
10.	सिल्वर जुबली	22-23
11.	सुनहरी धूप	24
12.	सपनों का पीछा	25-26
13.	चरित्र निर्माण	27
14.	विकल्प	28-29
15.	अनजानी डगर	30-31
16.	ऑक्सीजन	32

गलतफहमी

"शहर में हो रही लगातार चोरी और अन्य खबरें सुनने के बाद किसी पर भी भरोसा कर पाना बहुत मुश्किल हैं"। चिंता भरे स्वर में माया बोली। अभी कुछ ही दिन हुए उसके पति का तबादला हुए। अंजान जगह अंजान लोगो के बीच इतनी जल्दी कोई भरोसे का आदमी मिल पाना बहुत मुश्किल था, पर ईश्वर की कृपा थी कि पड़ोस बहुत ही मिलनसार और मददगार साबित हुआ।

अपने घर में काम करने वाली बच्ची को मदद के लिए भेजा, उनके घर का काम निपटा कर मेरे पास आ जाया करती थी, परंतु मन था जो हर वक्त शंका से घिरा रहता। मजबूरी के कारण काम पर तो रख लिया परंतु कभी भी उसे अकेले नहीं छोड़ा, हर वक्त एक पैनी निगाह रहती उस पर।

तीन चार दिन उसे बेहद ईमानदारी से काम करते देख मन को अब तसल्ली हुई। कुछ दिन बाद जब घर व्यवस्थित हुआ तो उसने देखा कि वह बच्ची एक कट्टे में कुछ भरती जा रहीं हैं। मन फिर एक बार शंका से भर गया। चुपचाप उसकी गैर हाजरी में उस थैले को टटोला। कुछ ना निकला कचरे में फेंके जाने वाला सामान भर रखा था। वह अचानक पीछे से आकर बोली," इसमें कुछ नहीं है। "

"आपने कहा था कचरे में फेंकने के लिए। " मैं इसे कबाड़ में बेचकर अपने लिए किताब खरीद लूंगी। मैं आगे पढ़ना चाहती हूं, पर पिताजी खर्च देने में असमर्थ हैं, इसीलिए तो काम करती हूं, आप यह कचरे में फेंक देते तो सोचा इसे कबाड़ी को देकर अपने किताब खरीद लूं। " माया ने उस बच्ची की तरफ देखा, पढ़ाई को लेकर एक अजीब सा जुनून था उसके मन में। अपने ही सोच पर अफसोस हो रहा था। अपनी गलतफहमी के चलते उसने एक उज्जवल भविष्य की कामना करती लड़की को गलत समझा।

अब उसने निश्चय किया कि मैं उस बच्ची को हमेशा अपने साथ रहेगी और जितना हो सकेगा उस को पढ़ाने में उसकी मदद करेगी। उसे अफसोस तो था, परंतु साथ ही साथ एक खुशी थी कि उसकी गलतफहमी के चलते वह एक बच्ची को उज्जवल भविष्य देने में अपना योगदान दे पाई।

सच्ची राह

कमल ने बचपन से ही अपने मां-पापा को कड़ी मेहनत करके जीवन की सुविधाएं जुटाते हुए देखा था। वह एक समझदार और संतुष्ट बच्चे की तरह जो मिलता उसी में खुश हो जाता। आज कमल बड़ा हो चुका था, उसकी शादी हो चुकी थी, और उसके दो बच्चे भी थे। आज भी कमल एक ईमानदार और परिश्रमी पुरुष था। उसके बच्चों को उसने एक अच्छे प्राइवेट स्कूल में दाखिल करवा रखा था। उसके बच्चे वैसे तो कमल की तरह ही संतुष्ट प्रवृत्ति के थे, परंतु विद्यालय में अन्य बच्चों की देखा देखी कभी-कभी कुछ चीजों की मांग कर दिया करते थे। कमल उन्हें समझाता और जरूरत होती तो उन्हें चीजें दिला देता परंतु हमेशा नहीं।

एक बार ऐसे ही स्कूल के किसी प्रोजेक्ट हेतु बच्चों ने उससे लैपटॉप दिलाने की बात कही, जिसे दिलाने में कमल असमर्थ था, जिसके चलते उसने अपने बच्चों को लैपटॉप दिलाने से मना कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उसके बच्चो को उस प्रॉजेक्ट को पूर्ण नहीं कर पाए और पूरे नंबर नही मिले, जिसके चलते उन्होंने एक सुअवसर को दिया। जब कमल को इस बात का पता लगा तो वह बड़ा ही दुखी हो गया कि वह अपने बच्चों को वह सारी सुख सुविधाएं नहीं दे पा रहा है, जिसकी आज उन्हें जरूरत हैं।

कई बार उसने सोचा की यदि उसने भी अन्य सहकर्मी के जैसा पैसा कमाया होता तो उसके बच्चो के साथ यह न हुआ होता। इसी हताश मन के साथ वह कहीं जा रहा था, तभी उसके कानों में मंदिर में हो रही एक कथा की आवाज पड़ी जिसमे बोला जा रहा था कि सही राह पर चलने वाले को बेशक ही कुछ समय के लिए कठिनाई का सामना करना पड़े, परंतु कभी न कभी उसे इसका सकारात्मक परिणाम मिलता ही हैं। कमल कहीं न कहीं यह बात जानता था, परंतु बच्चों की परेशानी को देखकर वो

विचलित हो गया, बेचैन मन के साथ वह घर लौटा और सो गया। सुबह वो दफ्तर के लिए निकल गया। लौटा तो उसने देखा की उसके बच्चों के हाथ में लैपटॉप था। उसने हैरान हो बच्चों से पूछा तो बच्चों ने उसे बताया कि जिस प्रोजेक्ट से उन्हें निकाल दिया गया था, उस पर जब प्रस्तुतीकरण की बारी आई तो जिन बच्चों ने उस प्रोजेक्ट को बनाया था, वह उसका प्रस्तुतीकरण देने में असमर्थ रहे, उन्होंने प्रोजेक्ट बना लिया था, पर उसके बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी उनके पास नहीं थी, परंतु कमल के बच्चो ने टीचर के पढ़ाई गई बातों के आधार पर उसका प्रस्तुतीकरण दिया, जिसके चलते हमें यह लैपटॉप उपहार स्वरूप मिला है।

बात इतनी सी थी की ज्ञान का दिखावा जरूरी नहीं ज्ञान होना और उसका सही समय पर उपयोग जरूरी होता हैं, और वही कमल के बच्चो ने किया। सुविधाओं के अभाव में भी उन्होंने अपने पढ़ाई में कोई कमी नहीं आने दी। बेशक उन्होंने प्रोजेक्ट नहीं बनाया पर उसके संपूर्ण जानकारी रखकर जिन्होंने प्रोजेक्ट बनाया था उससे अच्छा प्रस्तुतीकरण किया कमल की आंखों में खुशी के आंसू थे उसे पता चल गया था कि राह यदि सही हो तो कठिनाई कितनी भी आए, आपको कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

प्रीत की रीत

किसी गांव के अंत में जाकर एक सेठ की कोठी थी। सेठ बड़ा ही दयालु व्यक्ति परंतु गुस्सैल था। उसके गुस्से को देखते हुए सभी लोग उससे बहुत घबराते थे। उसके यहां दर्जनों नौकरों की भीड़ थी। उनमें से ही एक थी कमला काकी, जिनके पति एक लंबी बीमारी के चलते काकी के भरोसे छोटे से बच्चे और ढेर सारा कर्ज छोड़ कर चल बसे। काकी बेसहारा हो गई। कहाँ जाती किस से कहती, ऐसे में उसने अपने बच्चे का सोचते हुए वहीं सेठ के पास नौकरी करने का निर्णय किया।

सेठ जी ने भी उसे बेसहारा जान अपने ही घर के बाहर एक कमरा रहने को दे दिया खाना पीना कपड़े आदि की मदद भी कर दी। कमला काकी के लड़का सेठ जी की छत्र छाया में बडा होने लगा। खुद की कोई संतान न होने के कारण सेठ जी अपना सारा प्रेम उस बच्चे पर ही लुटाने लगे। उसको अच्छे स्कूल में दाखिला भी दिलवाया, और उनकी हर जरूरत को पूरी की। कुछ समय के बाद कमला काकी बीमार रहने लगी। एक लंबे संघर्ष के बाद अपने लड़के को सेठजी के भरोसे छोड़ दुनिया से विदा ली, परंतु सेठ जी ने कभी भी उसको मां बाप की कमी महसूस नहीं होने दी।

ईश्वर की कृपा से बरसो बाद सेठ जी को पिता होने का सुख भी प्राप्त हुआ, परंतु सेठ जी का उस बालक के प्रति स्नेह कभी कम न हुआ। कमला काकी का लड़का सूरज, आगे की पढ़ाई करने विदेश भी गया, और बहुत बड़ा डॉक्टर बन गया और देश-विदेश में नाम करके जब वह लौटा तो उसने पाया कि अब वो पहले जैसी बात नही हैं। सेठ जी अब बूढ़े हो गए थे, ना पहले जैसा रौब था, ना ही वो कार्य क्षमता।

एक दिन सेठ जी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, "बेटा अब मैं बूढ़ा हो चुका हूं ना जाने कब ईश्वर का बुलावा आ जाए, अब मेरा कारोबार धन दौलत और

बिटिया को तुम्हारे जिम्मे छोड़ जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहता हूं। "सूरज की आखों में आंसू निकलने लगे और वह बोला, "बाबा मुझे आपके धन की आवश्कता नही, आपने मुझे इस काबिल बनाया हैं, कि मैं आपका और इस परिवार की जिम्मेदारियों को उठा सकता हूं, मुझ पर विश्वास रखें। " कुछ समय बीता और सेठ जी में दुनिया से विदा ली। सूरज ने अपने वादे के अनुसार सेठ जी की अंत्योष्टी की सभी जिम्मेदारियों को निभाया। सेठ जी की बेटी कोमल को बिल्कुल अपनी सगी बहन की जैसे रखने लगा। एक बार उसको अपने मेडिकल कॉन्फ्रेंस के लिए विदेश जाना था। कोमल को अकेले न छोड़ सकने की मजबूरी के चलते वह उसे अपने साथ ले गया।

विदेश किसी कागजी प्रक्रिया के चलते यह बात उजागर हुई की कोमल और सूरज भाई बहन नही हैं। कॉन्फ्रेंस का समय आया तो रिपोर्टर द्वारा उनसे यह सवाल किया गया कि वह लड़की कौन हैं, और आपका उससे इतना गहरा संबंध कैसे हैं ? उत्तर में सूरज ने कहा, "उसका मेरा कोई रिश्ता तो नही हैं, यह तो वो प्रीत डोर हैं जो किसी भी रक्त संबंध से बढकर हैं। मैं तो उसी प्रीत की रीत को निभा रहा हूं जिसने बरसो पहले मुझे एक नया जीवन दिया था।" कहते हुए सूरज आगे बढ़ गया और कोमल को गले से लगा लिया।

दिवाली

राशि एक राजकुमारी की तरह पली-बढ़ी लड़की थी। उसको मांगते ही उसकी मनचाही वस्तु मिल जाया करती थी। उसके पास कपड़े, पठन-पाठन की सामग्री, जूते-चप्पल साज-श्रृंगार का समान बेतरतीब ढंग से भरा था। कुछ चीज की तो उसने महीनों से सुध भी नहीं ली। दिवाली का समय नजदीक आ रहा था। साफ-सफाई के चलते घर की मददगार, राधा दीदी को देर तक उनके घर रुकना पड़ता था, तब उन्होने बेटी को अकेले घर पर इतनी देर छोड़ कर आने की असमर्थता जताई। राधा दीदी की जरूरत को देखते हुए राशि की माताजी ने बेटी को साथ ले आने का प्रस्ताव उनके सामने रखा, तो वह खुशी-खुशी राजी हो गई।

दिवाली की सफाई के चलते अब बारी आई राशि के कमरे की। सारा सामान बाहर निकाला गया, उसे साफ कर देने के बाद मां ने राशि से अनचाहा सामान अलग कर देने को कहा। क्या नया, क्या पुराना राशि ने काफी सारा सामान निकाल बाहर कर दिया। मां ने उसे समझाया, "राशि इसमें से बहुत सारा सामान तो तुमने एक बार ही काम लिया है, फिर इसे क्यों फेंक रही हो। " मां अब मैं नया लाऊंगी, यह मेरे किसी काम के नही है। "मां ने उसे बहुत समझाया, पर राशि की मर्जी के आगे उनकी एक न चली।

मां राधा दीदी को सारा सामान घर के भंगार के सामान में रखने को कह कर चली गई। राधा दीदी जब सामान रखने लगी तो उसमे से काफी सारा सामान उन्हें लगा कि उनकी बेटी के काम आ सकता है। हिचकिचाते हुए राशि की मां से कही। "तुम बिलकुल यह सामान ले जा सकती हो, यह हमारे अब किसी काम का नही है।" राधा दीदी ने उसमे से काफी सामान ले जाने के लिए रखा। जब घर लौटी और अपनी बेटी को वो सामान दिखाया जिसे पाकर उसके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई,

मानो दिवाली की खरीददारी में अपना मनपसंद सामान पा लिया हो, बाकी सामान को राधा दीदी ने अपने घर को व्यवस्थित करने में काम में लिया। किसी के घर की बेतरतीबी को दूर करने ने किसी दूसरे के घर को व्यवस्थित कर दिया।

आज दोनो बड़े खुश थे। एक ने अपने घर की अव्यवस्था को सही किया तो, दूसरे ओर उसी भंगार ने किसी ने अपने घर को व्यवस्थित रूप दे दिया।

दोनो ने हंसी खुशी दिवाली का पर्व मनाया।

परवरिश और संस्कार

किशन एक संयुक्त परिवार का मिलनसार लड़का था। साथ ही साथ वो जिस गांव का निवासी था, जिसमे तकरीबन तीस परिवार रहते थे। एकता इतनी कि छोटी-बड़ी हर तकलीफ या खुशी में वो तीस परिवार एक प्रतीक होते थे। एक परिवार की खुशी में तीस परिवार झूम उठते थे। एक की सफलता की दुआ के लिए सभी के हाथ उठते थे। संक्षेप में कहें तो वो तीस परिवारों वाला गांव नही, एक बड़ा संयुक्त परिवार ही था। उसी परिवार की दुआओं का असर था जिसके चलते किशन को शहर की बहुत बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई। शहर गांव से काफी दूर था, अतः किशन ने शहर में ही रहने का फैसला लिया।

सबकी दुआओं और आशीर्वाद को साथ लेकर किशन शहर को चला। जब किशन शहर पहुंचा तो पाया कि वहां की दुनिया गांव की दुनिया से बिल्कुल अलग। यहां किसी को किसी से कोई मतलब नही था। सभी अपना एकाकी जीवन जीते है। किसी के सुख दुख में शामिल होना, औपचारिकता मात्र थी। खैर कार्यालय द्वारा स्थापित एक पी.जी. में किशन को एक कमरा मिल गया, और वह वहां पर जाकर रहने लगा और काम करने लगा। धीरे-धीरे उसने खुद को शहरी माहौल में ढाल लिया।

कुछ ही समय में उसने अपने कार्य और व्यवहार कुशलता से अपने मालिक का दिल जीत लिया। कुछ समय बाद दफ्तर में एक नई भर्ती हुई। गहरा रंग, अतरंगी सा पहनावा लिए एक युवक ने दफ्तर में प्रवेश किया। बोलते समय वो थोड़ा हकलाता भी था। दफ्तर के निवास स्थान पर कमरे उपलब्ध ना होने के कारण कमरे सांझा करने की बात चली, परंतु कोई भी व्यक्ति उसके साथ कमरा सांझा करने को तैयार ना हुआ तब किशन ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। कुछ समय के बाद ही सबको

किशन की पदोन्नति की खबर लगी, किशन के साथ ही सभी सहकर्मी भी इस बात से हैरान थे। काम करते-करते कर्मचारियों ने देखा वही युवक सूट-बूट पहन कर दफ्तर में प्रवेश कर रहा है। कुछ समय बाद पता चला कि वह और कोई नही दफ्तर के मालिक का बेटा था जो हाल ही विदेश से अपनी पढ़ाई पूरी करके लौटा है। उसे अपने साथ काम करने वाले एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो किसी की भी मदद करने के लिए तत्पर रहता हो जिसके चलते उसने यह नाटक किया। यह खूबी उसे किशन में दिखी, और कार्यालय में पदोन्नति के साथ, वह सेठ जी के बेटे का दाहिना हाथ बन गया।

जब उससे पूछा गया कि सब ने मदद करने से मना कर दिया, फिर तुमने कैसे हां कर दिया। उसने कहा, "साहब हमारे तो गांव भर में कोई एक दूसरे को या किसी अनजान को भी किसी तरह के काम या मदद के लिए मना नहीं करते फिर भला मैं अपने सहकर्मी को कैसे माना कर सकता था।" उसका यह वाक्य सुन कर उसका मालिक बोला, "निश्चय ही तुम्हारी परवरिश बड़े ही संस्कारों वाली रही तब ही तो शहर में आकर भी तुम उसके परिवेश से प्रभावित नही हुए, और अपने माता पिता की सीख नही भूले, इसके चलते ही तुमने मेरे दिल में एक खास जगह बना ली है, और तुम्हे अब आसमान छूने से कोई नहीं रोक सकता," कहते हुए उसने को गले से लगा लिया।

उपकार

अपनी माताजी के देहांत के बाद गीता ने अपनी मां के जन्मदिवस पर भूखे लोगों को खाना खिलाने का तय किया। इसी सोच के साथ वह हर रविवार स्वयं भोजन बनाकर एक निश्चित जगह पर स्टैंड लगा कर भोजन खिलाती थी। लोगों की भावनाओं को ठेस ना पहुंचे इस कारण वह उनसे जो बन पड़ता था ले लेती थी। जो कुछ देने में असमर्थ होते थे, उसे वह बिना एक भी रुपया लिए भी खाना खिलाती थी। ऐसे में कई सहकर्मी जब उसके पास से होकर गुजरते थे, तो वह उनका मजाक उड़ाते थे "क्या कर लोगी इससे?" तब उसका जवाब होता था, "यह कुछ पाने के लिए नहीं कर रही अगर मुझे किसी को दो वक्त की रोटी खिलाने का सौभाग्य मिल रहा है, तो क्यों नहीं?" दोस्तों ने मजाक बनाया।

एक दिन ऐसे ही दोस्तों ने घूमने का विचार बनाया गीता से पूछा तो उसने मना कर दिया तब उनमें से एक जिसका नाम चेतन था बोला "मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं और देखता हूं कि कौन तुम्हारे खाने के लिए आतुर है और कौन तुम्हारे प्रति कृतज्ञ है। वह गीता के साथ गया देखा तो सभी लोग ₹2 ₹5 देकर भरपेट खाना ले जा रहे थे, परंतु किसी ने भी गीता को धन्यवाद नहीं कहा ऐसे में उस दोस्त ने उसे चिढ़ाया," देखा तुम्हारे इस कार्य की किसी को कोई कदर नहीं है। "तभी वहां एक औरत आई जिसे वह दोस्त पहचान गया, वह उस दोस्त के घर में काम करने वाली एक महिला थी। उसे देख कर वह दोस्त हैरान हुआ और पूछा कि मैं तुम्हें तुम्हारा वेतन समय पर देता हूं, फिर तुम्हें यहां पर खाना खाने की जरूरत क्यों पड़ी तब उसने बताया," साहब जो सैलरी आप मुझे देते हैं वह मेरे बच्चे की पढ़ाई और किराए में खर्च हो जाती है। यह तो गीता दीदी जैसे कुछ लोग है, जो हमारे स्वाभिमान को रखते हुए, हमे भोजन उपलब्ध कराती है। मेरी दिल से दुआ है की गीता दीदी खूब तरक्की करें, और यह

जानकर प्रसन्नता हुई कि आप इनके दोस्त है। " इतना कहकर वह चली गई। चेतन निशब्द था।

उसे अपने कहे हुए शब्दो पर अफसोस हो रहा था। किसी के द्वारा किया गया उपकार किसी की जिंदगी बदल सकता है। इस उपकार का एहसास किसी के मन में होता है, इसे जताना जरूरी नहीं होता। चेतन की आंखों शर्म से झुकी थी, और गीता की आंखों में खुशी के आसूं।

विसर्जन

दो साल पहले की बात है, दोस्तों के साथ रहते रहते न जाने कब जगदीश को शराब की बुरी लत लग गई। घर में पत्नी बच्चे सब उसे समझाते पर कोई असर नहीं। शराब की इस लत की अग्नि में घर की सारी जमा पूंजी स्वाहा हो गई। अब तो दो वक्त की रोटी मिल जाती थी, वहीं बहुत बड़ी बात थी। ऐसे में चुनिया एक दिन बीमार पड़ गई। अब उसकी दवाई और इलाज का खर्चे की जद्दोजहत; जगदीश को बेशक शराब की बुरी लत थी, परंतु अपने परिवार से वह बहुत प्यार करता था। ऐसे में चुनिया के बीमार होने पर वह मेहनत कर उसका इलाज दवा और आहार का खर्च संभालने लगा। चुनिया की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। वह चुनिया को खोना नही चाहता था।

इसी बीच गणपति का आगमन हुआ। जगदीश गणपति का बहुत बड़ा भक्त था। वह हर साल खुद के हाथ से गणपति को मूर्ति बनाता और स्थापित करता था। इन सब विपरीत हालातों के बावजूद जगदीश ने अपने हाथो से मिट्टी के गणपति को सजा कर स्थापित किया, पर आगे आने वाले दिनों में बप्पा की सेवा, भोग का इंतजाम वो कैसे करेगा यह सोचता सोचता वह सो गया, तभी उसे एक स्वप्न आया लगा, जैसे ईश्वर खुद उसे कह रहे हो, व्यसन मुक्त हो, बाकी मुझ पर छोड़ दे।

उसकी आंख खुली, स्वप्न पर हंसी आई, परंतु यह एहसास भी हुआ कि बच्ची के बीमार होने से लेकर आज तक उसने शराब को हाथ भी नहीं लगाया, वो सिर्फ और सिर्फ अपनी बच्ची के बारे में सोच रहा था। उसे उस नशे की जरूरत ही महसूस नहीं हुई, क्योंकि उसे नशा था अपनी बच्ची को सही करने का, जिसके चलते वो और कुछ सोच ही नहीं पाया था। मन ही मन वह खुश था कि बप्पा की कृपा से उसे यह स्वप्न आया, जिसके चलते उसे इतना बड़ा तोहफा दे दिया, फिर क्या था, बप्पा के विसर्जन

के साथ जगदीश ने अपने व्यसन का भी विसर्जन कर दिया, और बप्पा की कृपा से कुछ ही दिनों बाद उसे बप्पा के आशीर्वाद के रूप में अपनी बच्ची को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य पाया।

बोलो गणपति बप्पा मोरया .....

मार्गदर्शन

इम्तेहाम सिर पर थे, सो रजनी को बड़ी चिंता सता रही थी, कि उसकी लाडो क्या करेगी, वैसे तो वह खुद ही अपनी पढ़ाई का पूरा ध्यान रखती थी, परन्तु मां का दिल कहां सन्तुष्ट होता है? बैठ गई बिटिया को पढ़ाने तभी उसकी नजर कॉपी में लिखी कुछ पंक्तियों पर पड़ी, जो उसे छोटी परंतु बहुत ही सुंदर कविताओं के रूप में नजर आने लगी। पढ़ाते-पढ़ाते रजनी ना जाने कब अपने बचपन में पहुंच गई, जहां उसे याद आया उसे भी कविताएं लिखने का बड़ा शौक था, परंतु उचित मार्गदर्शन ना मिलने के कारण यह शौक अधूरा ही रह गया और शादी के बाद लगभग खत्म, परंतु अपनी बिटिया की इस कला को वह व्यर्थ नहीं करना चाहती थी, और उससे आगे बढ़ते हुए देखना चाहती थी।

ऐसे में इम्तिहान खत्म होने के तुरंत बाद उसने अपनी बिटिया से इस बारे में बात की जब बिटिया ने भी अपने इस शौक के बारे में उसे बताया, तो रजनी चल पड़ी एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में जो उसकी बिटिया को उचित मार्गदर्शन दें सकें। कहते हैं ना ढूंढो तो भगवान भी मिल जाते हैं। उन्हीं की कॉलोनी में एक बुजुर्ग हिंदी साहित्य के बहुत अच्छे ज्ञाता थे उन्होंने रजनी की बिटिया को हरसंभव मदद देने के लिए हामी भरी और फिर क्या था रजनी की बिटिया चल पड़ी एक जानी पहचानी परंतु नई दिशा की ओर। कुछ ही समय में रजनी की बिटिया राधिका एक उभरती हुई लेखिका के रूप में उभरी और बहुत से लोगों का प्रेरणा स्त्रोत।

राधिका अपनी माताजी के प्रयासों की और गुरु के मार्गदर्शन की सदा आभारी रही जिसने उसे एक पहचान दिलाई।

जादू का पिटारा

प्रसन्नचित मन और बड़े ही उत्साह के साथ नानी विवाह के सारे काम कर रही थी, और हो भी क्यों न अपनी इकलौती बेटी और दामाद को खो देने के बाद प्रिया ही तो उसके जीवन का एकमात्र सहारा थी। प्रिया पांच साल की थी जब उसके माता-पिता एक सड़क दुर्घटना का शिकार हो गए। बच्ची की अच्छी परवरिश हो सके इस ख्याल से नानी ने प्रिया को उसे अपनी बुआ के पास विदेश भेज दिया। विदेश में प्रिया ने अपनी पढ़ाई पूरी की, आज प्रिया पूरे बाइस साल की हो गई थी। शादी के लिए खास विदेश से अपने जन्मस्थान पर लौट आई थी। विदेश में पली-बढ़ी परंतु भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई। जिस दिन से प्रिया लौटी थी की जिस दिन से वह लौटी हैं, नानी कुछ समय के लिए अपने कमरे को बंद कर एक पुराने संदूक खोले न जाने क्या करती रहती थी। बहुत पूछा पर नानी ने कभी यह राज न खोला।

आज जब वह शादी के लिबास में दुल्हन बनी खड़ी थी, तो नानी ने उसे एक सुनहरी और लाल चुनरी उढ़ाई। चुनरी को देख प्रिया भावुक हो गई, यह बिल्कुल वैसी ही चुनरी थी, जैसी उसकी मां ने अपने विवाह पर पहन रखी थी। बचपन में एक बार उसने अपनी मां की शादी की तस्वीर देख कर अपनी नानी से कहा था, कि वह भी अपनी शादी में ऐसी ही चुनरी लेगी। जमाना बदल गई, शादी के जोड़े का प्रारूप बदल गया, परंतु प्रिया के लिए वह चुनरी उसके माता-पिता का एहसास था, जो चलन और आधुनिकरण की दौर से ज्यादा महत्वपूर्ण था। इसी के साथ नानी ने उसे एक बेहद खूबसूरत सी संदूक दी, जिस पर लिखा था जादू का पिटारा, उसे खोलते ही प्रिया के चेहरे पर एक बाल सुलभ मुस्कान थी, इसमें वह सारी चीज थी, जिसके खो जाने या छुपा देने के बाद वह बहुत रोई थी, और उसकी मां ने यह कह कर शांत कर दिया कि तेरी शादी पर सब तुझे दे देंगे। वो पहली गुड़िया, वो रसोई घर, वो छोटी सी

गुलाबी फ्रॉक, वो खट्टी मीठी गोली की खाली पन्नी और भी बहुत कुछ, वो पेटी यादों का पिटारा था। जो उसे अपने माता-पिता के साथ होने का एहसास दिलाती थी।

प्रिया ने नानी को कस कर गले लगा लिया और खुशी-खुशी अपने जीवन की नई शुरुआत की ओर कदम बढ़ा दिया।

सिल्वर जुबली

बिशन गांव की सरकारी स्कूल में सिर्फ 8वीं तक पढ़ा हुआ था। कोरोना काल में कम पढ़े-लिखे होने का एहसास बढ़ गया, जब उसकी नौकरी चली गई और अब जीवन-यापन के लिए सब्जी बेच कर गुजारा करना पड़ा, ऐसी परेशानी आगे जाकर उसके बेटे को न झेलनी पड़े ऐसा सोच उसने अपने बच्चे को अच्छे स्कूल में दाखिला करा दिया। जितना बड़ा स्कूल उतनी ही नई गतिविधियां।

एक बार उसके किसी दोस्त ने अपने माता-पिता की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह के लिए उसे आमंत्रित किया। आयोजन से लौटने के बाद उसने भी अपने माता-पिता की शादी की सालगिरह मानने की सोची, और अपने पिता से इस बारे में बात की। बेटे की इच्छा का मान रखते हुए पिता ने कुछ विचार कर हां कर दी, परंतु इस शर्त के साथ की कार्यक्रम विस्तृत नही होगा सिर्फ सीमित लोगो के साथ। अगले ही वर्ष बिशन की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह थी।

किशन ने अपने पिता को अपने वादे की याद दिलाई, और सालगिरह के दिन पर बड़े खुशी-खुशी स्कूल गया। स्कूल से लौट वह अपने पिता के लौटने का इंतजार कर रहा था। पिता के हाथों में ढेर सारे पौधे देख वह हैरान हुआ। उसने अपने पिता से इसका कारण पूछा। उसके पिता ने उसे समझाया कि हम अपनी सिल्वर-जुबली इन पौधों को लगाकर मनाएंगे। किशन के चेहरे पर जवाब से असंतुष्टि के भाव को भांप बिशन ने उसे समझाया, "बेटा हम यह आयोजन अपनी खुशी को जाहिर करने के लिए करते है। तुम अपने दोस्त के गए, वहां तुम खेले नाचे मजे किए, अपने दोस्त की खुशी में शामिल हुए, बड़ी अच्छी बात है, परंतु मात्र उसी कार्यक्रम को याद करके तुम फिर खुश हो पाए?" किशन ने ना में सिर हिलाया। उसके पिता ने उसे फिर समझाया, "बेटा हमारी पच्चीसवीं सालगिरह पर हम यह 25 पौधे लगाएंगे, निरंतर इनको बढ़ता

देखेंगे, नए पौधों को लगाकर हम उनको एक नया जीवन देंगे, और खुद को जीवन भर का तोहफा।" किशन बेहद खुश हो गया, और अपने पिता और दोस्तों के साथ मिलकर पौधे लगाने लगा। बाद में सबने मिलकर मां द्वारा बनाया स्वादिष्ट भोजन खाया, ढेरों बातें की और फिर किशन के सभी दोस्त अपने-अपने घर को लौट गए। उनके जाने के बाद किशन ने अपने माता-पिता को गले लगा लिया, सिल्वर जुबली नामक यह आयोजन किशन के लिए कभी न भूल सकने वाला यादगार दिन बन गया।

सुनहरी धूप

बहुत दिनों तक चाहे घने कोहरे के बाद आज धूप की पहली किरण मानो जीवन देती प्रतीत हो रही थी। बेटे के लिए एक सुशील और संस्कारी बहू लाकर प्रमिला जी निश्चिंत हो अपनी आगे की जीवन यात्रा कर रही थी। पति के जाने के बाद अकेलापन बहुत अखरता था, बहु के आने से यह कमी कुछ हद तक कम हुई, पर कोई खालीपन अब भी था मन में। "मां नाश्ता कर लीजिए" बहु के संबोधन से प्रमिला जी जैसे ख्याबों से बाहर आई। "अरे बेटा तुम भी नाश्ता कर लो,सुबह से काम में लगी हो," प्रमिला जी ने बड़े प्यार से अपनी बहु रश्मि से कहा। "मां बस थोड़ा सा काम निपटा लूं फिर लेती हूं, आप पी लीजिए।" दोपहर में खाने के बाद बहु मां जी के पास बैठी, और दोनों बातें करने लगी। बातों ही बातों में प्रमिला जी ने अपने एक बेटी होने की इच्छा जताई, जो पूरी न हो सकी। प्रमिला जी की भीगी पलकों को देख एक बाल सुलभ मुस्कान के साथ रश्मि ने उन्हें कस के गले लगा लिया, और बोली, "मां मैं भी तो आपकी बेटी हूं।" रश्मि के यह शब्द सुनते ही पलको पर रुके आंसू ढलक कर नीचे आ गए, और दोनो के हो अधरों पर मुस्कुराहट की सुनहरी धूप खिल उठी। दिल का वो खाली कोना शायद अब भर रहा था।

सपनों का पीछा

रस्तोगी जी एक संयुक्त परिवार के सदस्य हैं, चार भाइयों का हंसता खेलता सुखी परिवार। ईश्वर की कृपा से कोई कमी नहीं थी जीवन में, परंतु रस्तोगी जी की एक ही तकलीफ थी वो था उनका छोटा बेटा, सभी चार भाइयों के सात बेटों में से न जाने कहाँ से इसकी सोच एक दम अलग थी, कोई व्यापार में हाथ जमा रहा था, कोई टेक्नोलॉजी में, तो कोई उद्योग क्षेत्र में, एक विपुल न जाने कहाँ घर के कबाड़ में अपनी खुशी ढूंढ रहा था।

बचपन से ही कबाड़ से अतरंगी निर्माण करता था। बचपन तक ठीक था, सब बचपन का शौक समझ उसकी इस कला की प्रशंसा करते थे, लेकिन अब इतना पढ़ लिखने के बाद भी यह कार्य करना सबको समय की बरबादी लगने लगी। सब इस बात से परेशान थे कि शौकिया तौर पर तो ठीक है परंतु जीवन यापन के लिए वह क्या करेगा, क्या वह अपने पिता या भाइयों पर निर्भर रहेगा? पिता के बार बार टोकने की आदत से परेशान हो, विपुल घर के कोने में बने एक कमरे में अपनी कला को अंजाम देने लगा।

दिवाली का समय था। विपुल ने अपना बनाया हुआ सामान साफ करने, और अंतिम चरण के कुछ गतिविधियों के लिए बाहर निकाला। उसी समय रस्तोगी जी के पड़ोसियों के घर व्यापार दृष्टि से कुछ विदेशी सैलानियों का आना हुआ। आंगन में रखी उन वस्तुओं को देख वो आकर्षित हुए, और देखने जाने की अनुमति ली। विपुल ने उन्हें सहर्ष आमंत्रित किया, और अपनी कला की विस्तृत जानकारी उन्हें दी, किस चीज को किस बेकार वस्तु से बनाया है। विदेशी मेहमान बड़े खुश हुए, बेकार चीजों को पुनरावृत्ति कर इस्तमाल तो किया था, परंतु यह कुछ नया था।

आकर्षण का केंद्र थी, प्लास्टिक की बोतल से बनी कुर्सी, और गत्तों से बनी मूर्ति। एक बार में देख कर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि यह सामान बेकार चीजों से बना है। उस दिन विपुल के लिए एक नया सवेरा हुआ। काफी उत्पाद हाथों हाथ बिक गए, अधिक मांग के साथ,बस विपुल के सपनों को पूरा करने का जरिया मिल गया। आज दो सालों के अंदर विपुल एक जाना माना चेहरा बन गया। आज वह अपने सभी भाइयों से अधिक संपन्न और नामी व्यक्ति बन गया है।

सार : *अपनों को छोड़ कर न सही, पर यदि अपनो का साथ न भी मिले, तो भी सपनो का साथ न छोड़े, यदि आप नियमित परिश्रम करेंगे, तो एक दिन अपने और सपने दोनों अवश्य ही साथ होंगे।*

चरित्र निर्माण

शारीरिक शिक्षा भाग-2 और चरित्र-निर्माण के दो विषयों को वैकल्पिक से हटाकर अनिवार्य कर देने पर सुधा का गुस्सा सातवें आसमान पर था। "पढाई लिखाई तो करवाते नहीं, अब बेकार में ही यह दो विषय और जोड दिए। भला इनकी क्या जरूरत है अनिवार्य विषय में।" शिकायती लहजे में सुधा ने सुधांशु की और जताते हुए बोला। "पर अब क्या करें, दूध देने वाली गाय की लात भी सहनी पड़ती है। अच्छे स्कूलों की बढ़ती मांग भी पूरी करनी पड़ेगी।" सुधांशु ने शिकायती लहजे में उत्तर दिया। फिर क्या था, स्कूल द्वारा निश्चित बढ़ाई गई धनराशि बेमन के साथ जमा करवाई गई। बेटी पिंकी घर की गुड़िया सी, और बेटा पार्थ अधिक लाड प्यार से बिगड़ा हुआ। सुधा रोज उनसे स्कूल से करवाए कार्य की जानकारी लेती, परंतु हाल ही में जुड़े विषयों की कोई खास जानकारी उसे न मिल सकी। समय बीता, अब सुधा उस ओर थोड़ी लापरवाह हो गई थी।

अचानक एक दिन कॉलोनी में किसी कार्यक्रम में एकत्रित हुए सभी लोगों के रहते, कुछ नवयुवकों में कहा सुनी हो गई, तब पिंकी और पार्थ ने बड़े ही तार्किक तरीके से बात को संभाला। पिंकी के आत्मविश्वास, और पार्थ के संयम पूर्ण व्यवहार को देख सुधा और सुधांशु दोनों सकते में आ गए। उनके साथ पढ़ने वाले अन्य बच्चों के व्यवहार में भी काफी सकारात्मक बदलाव देखा, जो की अभिभावकों के लाख प्रयास के बाद भी नहीं आया था। धीरे-धीरे इस के और सकारात्मक बदलाव देखने को मिले, जो निश्चय ही स्कूल में मिल रही शिक्षा का प्रभाव था। सुधा और सुधांशु सहित अन्य सभी अभिवावकों ने यह माना कि निश्चय ही कोई भी माता पिता अपने बच्चों का चरित्र निर्माण सही दिशा में ही करने में प्रयासरत होते है, परंतु समाज और शिक्षा का योगदान भी इसमें निश्चय ही सराहनीय और अनुसरणीय होता है।

विकल्प

रीता देवी को बचपन से ही पेड़-पौधे लगाने का बहुत शौक था। आज अधेड़ उम्र की होने के बाद भी यह शौक उनके साथ था। अपने पति के रिटायर्ड होने के बाद उनके इस शौक ने फिर एक बार उड़ान भरी। छोटे से घर के आंगन में अदरक, धनिया, मिर्ची आदि कुछ पौधे उन्होंने लगा रखे थे। ऐसे ही कुछ पौधे उन्होंने अपनी छत पर भी लगाए। उन्हें हर संभव देखभाल दे सकने के लिए वह हमेशा भाग दौड़ करती रहती। इस पर उनके पति की सलाह, "कभी थोड़ा आराम भी कर लिया कीजिए," अक्सर सुनाई दे जाया करती थी।

इसी दौरान एक समय आया कोरोना कल का, जिसने सभी को अपने घरों में कैद कर दिया। सभी डर के साए में जी रहे थे। बाहर से कुछ लाना, कुछ खाना, कहीं जाना सब बंद हो गया था। यहां तक की सब्जी तरकारी आदि लाने में भी डर लगता था, ऐसे में रीता जी की बागवानी बहुत काम आई। समय और परिस्थितियों को देखते हुए घर के अन्य सदस्यों ने भी उनके इस कार्य में उनके साथ दिया। घर की छत पर टेरेस गार्डन के अंदर सहज रूप से उगाई जाने वाली सभी सब्जियां उगाई गई। परिणाम स्वरूप सब तो नहीं परंतु काम चलाने लायक सब्जियां उपलब्ध हो गई।

कोरोना कल में जब हालत बिगड़ने लगे टीवी और अखबारों में खबरें पढ़ कर जो हालात देखे गए जहां पर सभी चीजों के विकल्प ढूंढे जा रहे थे। यहां तक की प्राण वायु का भी विकल्प ढूंढा जा रहा था। ऐसे में रीता जी की यह सब्जियां उनके लिए एक वरदान साबित हुई। घर में बिना कीटनाशक के उगी यह सब्जियां, सेहत की दृष्टि से ठीक थी। उस दौरान रीता जी के इस शौक की असली पहचान हुई।

आज पति देव भी उनके इस शौक से खुश थे। रीता जी ने यह सिद्ध किया कि हर इंसान को अपने अंदर एक ऐसे शौक को अवश्य जीवित रखना चाहिए, जो विपरीत समय में आपके लिए परिस्थितियों से लड़ने का एक अच्छा विकल्प बन सके।

अनजानी डगर

अपने दोस्तों की बात से पथभ्रमित हो केशव भटक गया था। केशव एक होनहार बालक था। इंजीनियर बनना उसका बचपन से ही सपना था। जैसे-जैसे वो आगे बढ़ता गया, दोस्तो के मुंह से अलग-अलग पाठ्यक्रमों के बारे में सुनकर केशव बहुत कुछ करने की कोशिश में जुट गया,परंतु बहुत कुछ पाने की चाह में वह किसी में अपने आपको साबित नहीं कर पाया।

कई कोशिश में असफलता प्राप्त करने के बाद अवसाद से ग्रस्त हो उसने आत्महत्या करने का प्रयास किया। ईश्वर को मगर कुछ और ही मंजूर था, वह बच गया। माता-पिता को पता चला, वे उससे मिलने आए, पिता ने समझाते हुए कहा, "बेटा हमने कभी अपनी मर्जी तुम पर नहीं थोपी। तुमने जिस क्षेत्र में चाहा हमने तुम्हे उस की पढ़ाई करने की अनुमति दी, जो चाहा वो तुम्हे करने दिया, फिर यह कदम उठाने का क्या कारण है।" "पिता जी पर मैं असफल रहा, केशव रोते हुए बोला।"

पिताजी ने उसके सिर पर हाथ फेरा और उसे समझाया, " बेटा कुछ नया करना, कभी भी बुरा नहीं होता, अगर कुछ नया नहीं करोगे, तो कुछ हासिल नहीं कर पाओगे, परंतु किसी भी अनजान डगर को चुनने से पहले उसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए। उसमें मौजूद गड्ढों (मुसीबत) की जानकारी रखना जरूरी है तभी तुम एक सुखद सफर तय कर पाओगे। इसके बावजूद भी जरूरी नहीं कि तुम लड़खडाओगे नहीं, या गिरोगे नहीं, पर फिर कभी भी ऐसा कदम मत उठाना जिससे तुम एक अनसुलझा सवाल बन जाओ, अपितु गिरने के बाद उठना, संभालना और फिर चल कर एक आयाम हासिल करना ताकि तुम किसी के सवालों के जवाब बन सको।

"केशव के आंखों से आसूं बहने लगे, उसने कहा," पिता जी आप जैसे पिता के होते हुए मैने ऐसा कदम उठाया, उसके लिए बेहद शर्मिंदा हूं। आप सब से माफी चाहता हूं, और वादा करता हूं कि अब मैं पुनः प्रयास करते हुए सफलता को प्राप्त करूंगा।"

फिर क्या था, पूरे जोश,आत्मविश्वास, और सावधानी के साथ केशव ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और सफलता के झंडे गाड़ दिए।

ऑक्सीजन

हमेशा चुलबुल का रहने वाला आदी आज बहुत ही शांत था। आदी बहुत ही शरारती बच्चा था, इकलौता होने के कारण पूरे घर की आंखों का तारा था। लाख शरारतो के बावजूद भी उससे कोई कुछ ना कहता। आदि आते जाते पेड़ों की टहनियों को फूलों को तोड़ देता था। लाख समझाने पर भी वह अपनी आदत नहीं छोड़ रहा था। अब तो सब ने उसे कहना भी छोड़ दिया था, परंतु आज जब उसको एकदम चुप चाप देख दादाजी ने उससे पूछा "क्या बात है बेटा, आज इतने गुमसुम क्यों हो?" आदी के आँखों में आसूं आ गए, वह बोला, "दादाजी, आज हमारी टीचर ने हमें पेड़ों का महत्व समझाया। उन्होंने हमें समझाया की पेड़ ही पृथ्वी पर जीवन चक्र का आधार हैं। मैं समझ गया हूँ कि आप सभी मुझे पेड़ो को तोड़ने से मना करते थे। आज मैंने जाना कि पेड़ सिर्फ हमें फल और सब्जियां ही नहीं देते, बल्कि प्राणवायु ऑक्सीजन भी देते हैं; जिसके बिना हमारे जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। दादा जी सच में मुझे आज से पहले इसकी जानकारी नहीं थी और अब मैं आपसे वादा करता हूं कि वह कभी भी पेड़ों को क्षति नहीं पहुँचाएगा। कहते कहते आदि के आंखों से आंसू की धारा बहने लगी। दादाजी ने उसे गले से लगा लिया और कहा बेटा इसमें तुम्हारी साथ-साथ हमारी भी गलती है। हमने तुम्हें कभी पेड़ों के महत्व के बारे में बताया ही नहीं, सिर्फ डांटते रहे। अब जब तुम जान गए हो तो आगे से ध्यान रखना कि ना कभी तुम उन्हें क्षति पहुंचाना और ना ही किसी को पहुंचाने देना। जितना हो सके पेड़ लगाना और उनकी सुरक्षा करना। आदि ने दादाजी को वादा किया कि दादा जी आगे से मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखूंगा और ऐसा कह कर के दादा जी के साथ बगीचे में पेड़ लगाने चला गया। अब वह नियमित रूप से पेड़ों में पानी देता था और उनकी देखभाल करता था।

नाम : **सोनम लड़ीवाला**
पिताजी : श्रीमान राम शरण लड़ीवाला
माताजी : श्रीमती सरला लड़ीवाला
बहन : शुभ्रा लड़ीवाला
शिक्षा : स्नातकोत्तर अंग्रेजी
विधा : स्वतंत्र
शौक : लिखना, पढ़ना, पढ़ाना
पता : श्री राम शरण लड़ीवाला लड़ीवालों की बगीची,आगरा रोड, घाट गेट, जयपुर, राजस्थान।
उपलब्धि : अन्तरीप नामक एक त्रैमासिक पत्रिका में मेरी कुछ कविताओं का प्रकाशन, ऑनलाइन हुई कई प्रतियोगिताओं में अनेक सम्मान जैसे युगदृष्टा,साहित्य पुजारी, निर्मल मानस आदि।
भावनाएं भाग 1 काव्य लेखन में मेरी काव्य का प्रकाशन अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन द्वारा।

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-43-7
मूल्य- 200/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com